अजीव के लक्षण तथा भेद

Created By:- श्रीमती सारिका विकास छाबड़ा

www.JainKosh.org

चेतनता बिन सो अजीव है, पंच भेद ताके हैं ।
पुद्गल पंच वरन-रस, गंध दो फरस वसू जाके हैं ॥
जिय पुद्गल को चलन सहाई, धर्म द्रव्य अनरूपी ।
तिष्ठत होय अधर्म सहाई जिन बिन-मूर्ति निरूपी ॥७॥

- चेतनता-बिन= चेतनता रहित है
- सो= वह
- ताके= उस अजीव के
- फरस= स्पर्श
- वसू= आठ
- जिय= जीव को
- चलन सहाई= चलने में निमित्त
- अनरूपी= अमूर्तिक है, वह
- तिष्ठत= गतिपूर्वक स्थितिपरिणाम को प्राप्त
- होय= होता है
- जिन= जिनेन्द्र भगवान ने
- बिन-मूर्ति= अमूर्तिक,
- निरूपी= अरूपी

www.JainKosh.org

चेतनता बिन सो अजीव है, पंच भेद ताके हैं ।
पुद्गल पंच वरन-रस, गंध दो फरस वसू जाके हैं ॥
जिय पुद्गल को चलन सहाई, धर्म द्रव्य अनरूपी ।
तिष्ठत होय अधर्म सहाई जिन बिन-मूर्ति निरूपी ॥७॥

अजीव	जिसमें चेतना (ज्ञान-दर्शन) नहीं होती
अजीव के पाँच भेद	पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल
पुद्गलद्रव्य	जिसमें रूप, रस, गंध, वर्ण और स्पर्श होते हैं
धर्मद्रव्य	जो स्वयं गति करते हुए जीव और पुद्गल को चलने में निमित्तकारण होता है
अधर्मद्रव्य	जो स्वयं (अपने आप) गतिपूर्वक स्थिर रहे हुए जीव और पुद्गल को स्थिर रहने में निमित्तकारण है
अमूर्तिक	जिसमें रूप, रस, गंध, वर्ण और स्पर्श नहीं होते हैं

www.JainKosh.org

द्रव्य कौन-कौन से ?

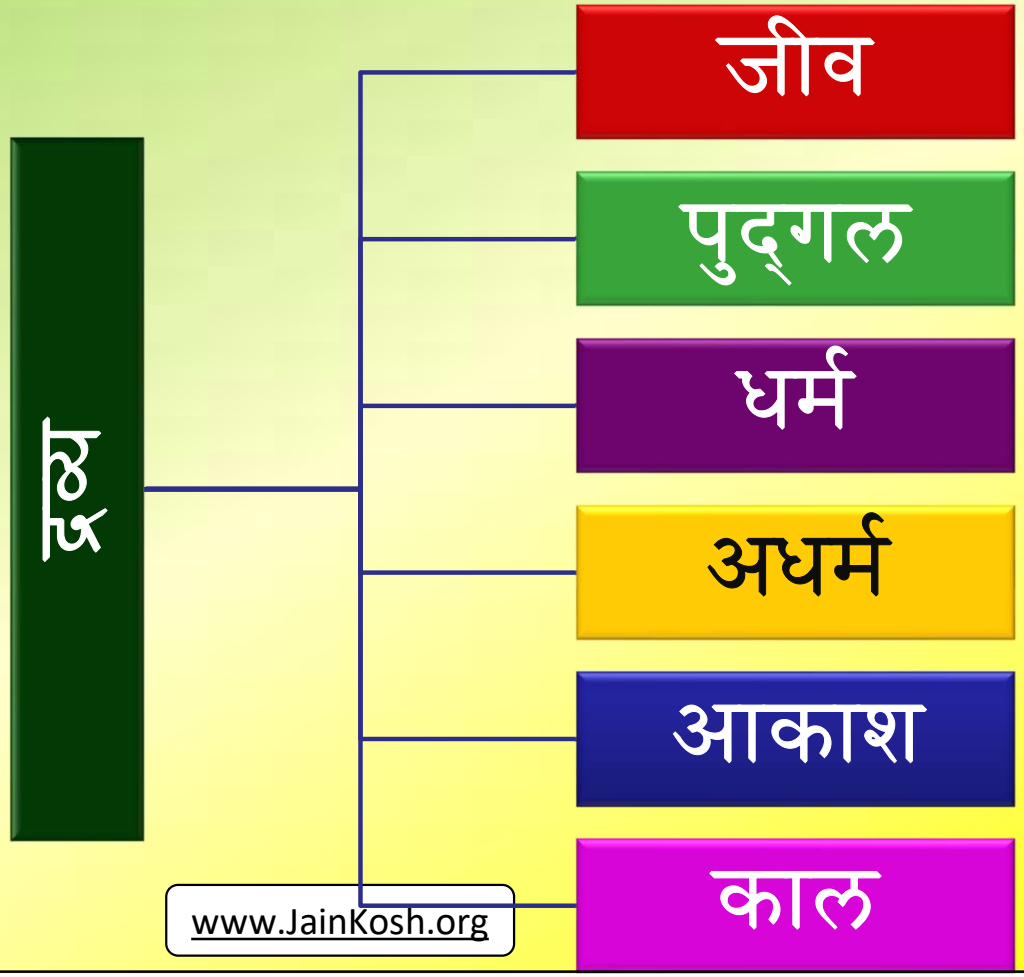

www.JainKosh.org

अजीव द्रव्य कितने हैं?

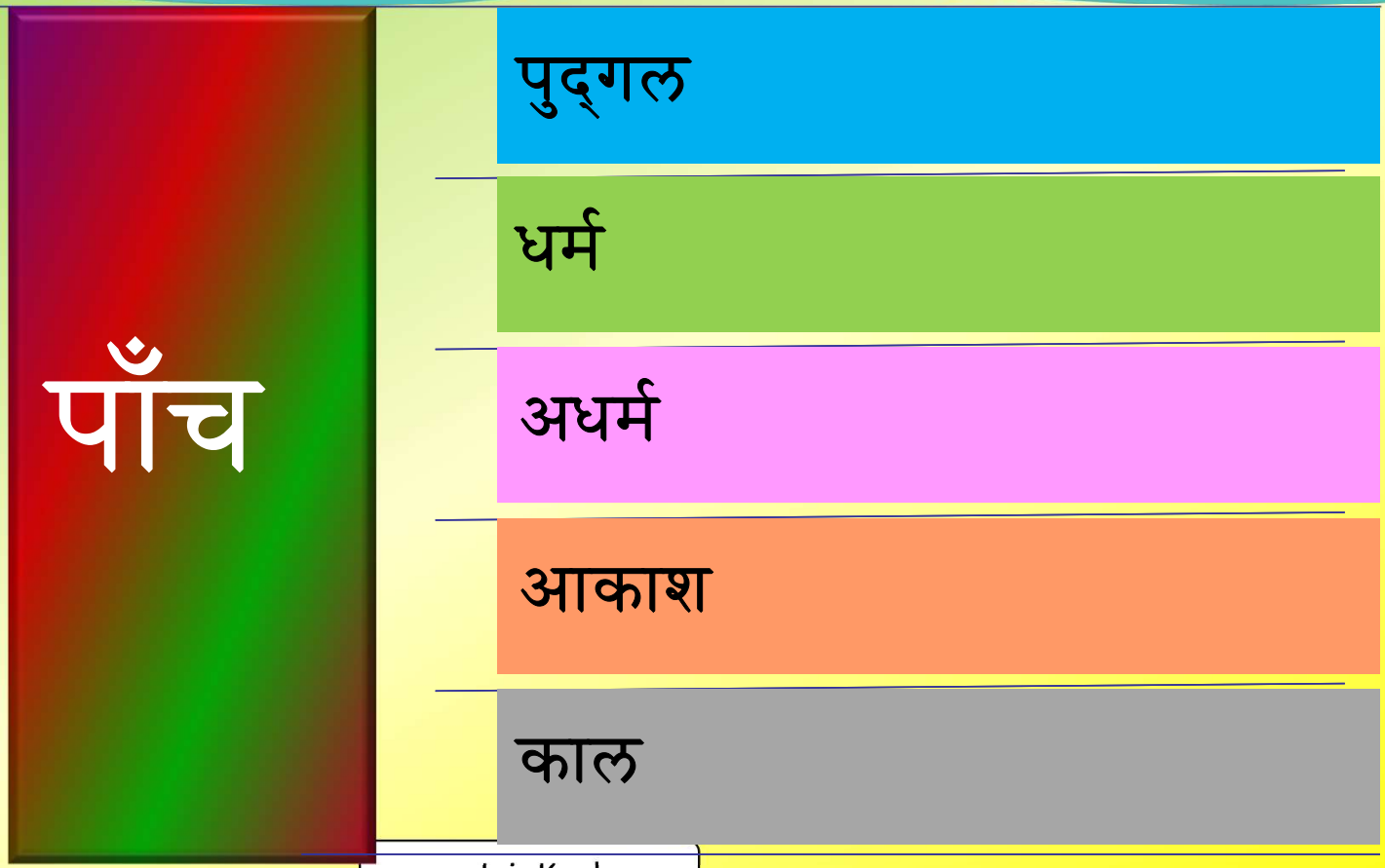

www.JainKosh.org

पुद्गल किसे कहते हैं?

जिसमें स्पर्श, रस, गंध, वर्ण पाया जाए

www.JainKosh.org

पुद्गल के गुण

- स्पर्श
  - हल्का-भारी
  - रुखा-चिकना
  - कड़ा-नरम
  - ठंडा-गरम
- रस
  - खट्टा
  - मीठा
  - कडुवा
  - कसायला
  - चरपरा
- गंध
  - सुगंध
  - दुर्गंध
- वर्ण
  - काला
  - सफेद
  - पीला
  - लाल
  - नीला / हरा

www.JainKosh.org

पुद्गल के भेद

- परमाणु
- स्कंध

www.JainKosh.org

पुद्गल

परमाणु –

पुद्गल का सबसे छोटा टुकड़ा

स्कंध –

दो या दो से अधिक परमाणुओं का समूह

धर्म द्रव्य किसे कहते हैं?

जो स्वयं चलते

जीव और पुद्गल को

चलने में निमित्त है

जैसे स्वयं चलती मछली को जल निमित्त है

www.JainKosh.org

ये धर्म द्रव्य
की बात है

यहाँ पूजा-पाठ को
धर्म नहीं कहा हैं

www.JainKosh.org

अधर्म द्रव्य किसे कहते हैं?

गमनपूर्वक

ठहरने वाले

जीव और पुद्गल को

जो ठहरने में निमित्त है

जैसे पथिक को पेड़ की छाया

www.JainKosh.org

धर्म, अधर्म, आकाश द्रव्य अमूर्तिक हैं

याने इनमें स्पर्शादि गुण नहीं पाए जाते हैं

याने यह इन्द्रियों से नहीं जाने जा सकते हैं

www.JainKosh.org

आकाश, काल और आस्रव के लक्षण अथवा भेद

www.JainKosh.org

सकल द्रव्य को वास जास मे, सो आकाश पिछानो;
नियत वर्तना निशिदिन सो, व्यवहारकाल परिमानो ।
यों अजीव, अब आस्रव सुनिये, मन-वच-काय त्रियोगा;
मिथ्या अविरत अरु कषाय, परमाद सहित उपयोगा ॥८॥

- सकल= समस्त
- वास= निवास है
- जास में= जिसमें
- पिछानो= जानना;
- नियत= निश्चय कालद्रव्य है
- वर्तना= प्रवर्तित होने में
- निशिदिन= रात्रि, दिवस
- परिमानो= जानो ।
- अरु= और
- उपयोग= आत्मा की प्रवृत्ति

www.JainKosh.org

सकल द्रव्य को वास जास में, सो आकाश पिछानो;
नियत वर्तना निशिदिन सो, व्यवहारकाल परिमानो ।

आकाश	जिसमें छह द्रव्यों का निवास है
निश्चय काल	जो अपने आप बदलता है तथा अपने आप बदलते हुए अन्य द्रव्यों को बदलने में निमित्त है
व्यवहार काल	रात, दिन, घड़ी, घण्टा आदि

www.JainKosh.org

यों अजीव, अब आस्रव सुनिये, मन-वच-काय त्रियोगा;
मिथ्या अविरत अरु कषाय, परमाद सहित उपयोगा ॥८॥

- इसप्रकार अजीवतत्त्व का वर्णन हुआ । अब आस्रवतत्त्व का वर्णन करते हैं ।
- उसके मिथ्यात्व, अविरत, प्रमाद, कषाय और योग ऐसे पाँच भेद हैं

www.JainKosh.org

आकाश क्या है?

जो सभी द्रव्यों को रहने में निमित्त है

अवगाहन-हेतुत्व

www.JainKosh.org

आकाश द्रव्य-कुछ तथ्य

ऊपर नीला दिखने वाला कौनसा द्रव्य है?

पुद्गल

ऐसी कौन-सी जगह हैं जहाँ जगह नहीं है?

आकाश का दूसरा नाम जगह ही है

इसलिये आकाश सर्वत्र है

www.JainKosh.org

आकाश

लोकाकाश	•जहाँ तक जीवादि छह द्रव्य पाये जाते हैं
अलोकाकाश	•जहाँ केवल आकाश द्रव्य पाया जाता है

www.JainKosh.org

काल द्रव्य किसे कहते हैं?

जो समस्त पदार्थों के परिणमन (परिवर्तन) में निमित्त हो

काल द्रव्य की अवस्था का नाम समय है

दिन, घंटा, महीना, वर्ष आदि व्यवहार काल है

www.JainKosh.org

काल द्रव्य

निश्चय काल

- जो समस्त पदार्थों के परिणमन में निमित्त हो
- इसे कालाणु भी कहते हैं

व्यवहार काल

- काल द्रव्य की अवस्था
- जैसे समय, दिन, घन्टा, महीना, वर्ष आदि

www.JainKosh.org

कौन-सा द्रव्य किसको निमित्त होता है?

द्रव्य	किसको निमित्त?	किसमें?
धर्म द्रव्य	जीव और पुद्गल व	चलने में
अधर्म द्रव्य	जीव और पुद्गल व	ठहरने में
आकाश	सभी को	रहने में
काल	सभी को	बदलने में

www.JainKosh.org

द्रव्य कितने हैं?

- द्रव्य जाति अपेक्षा छह हैं

www.JainKosh.org

प्रत्येक द्रव्य - संख्या अपेक्षा

जीव	• अनंत
पुद्गल	• जीवों से अनंतगुणे अर्थात् अनंतानंत
धर्म, अधर्म, आकाश	• एक-एक
काल	• असंख्यात

www.JainKosh.org

द्रव्यों का नाप

जीव द्रव्य	• असंख्यात प्रदेश
पुद्गल द्रव्य	• एक से प्रारंभ करके दो, तीन आदि अनेक प्रदेश
धर्म द्रव्य	• असंख्यात प्रदेश
अधर्म द्रव्य	• असंख्यात प्रदेश
आकाश द्रव्य	• अनंत प्रदेश
काल द्रव्य	• एक प्रदेश

www.JainKosh.org

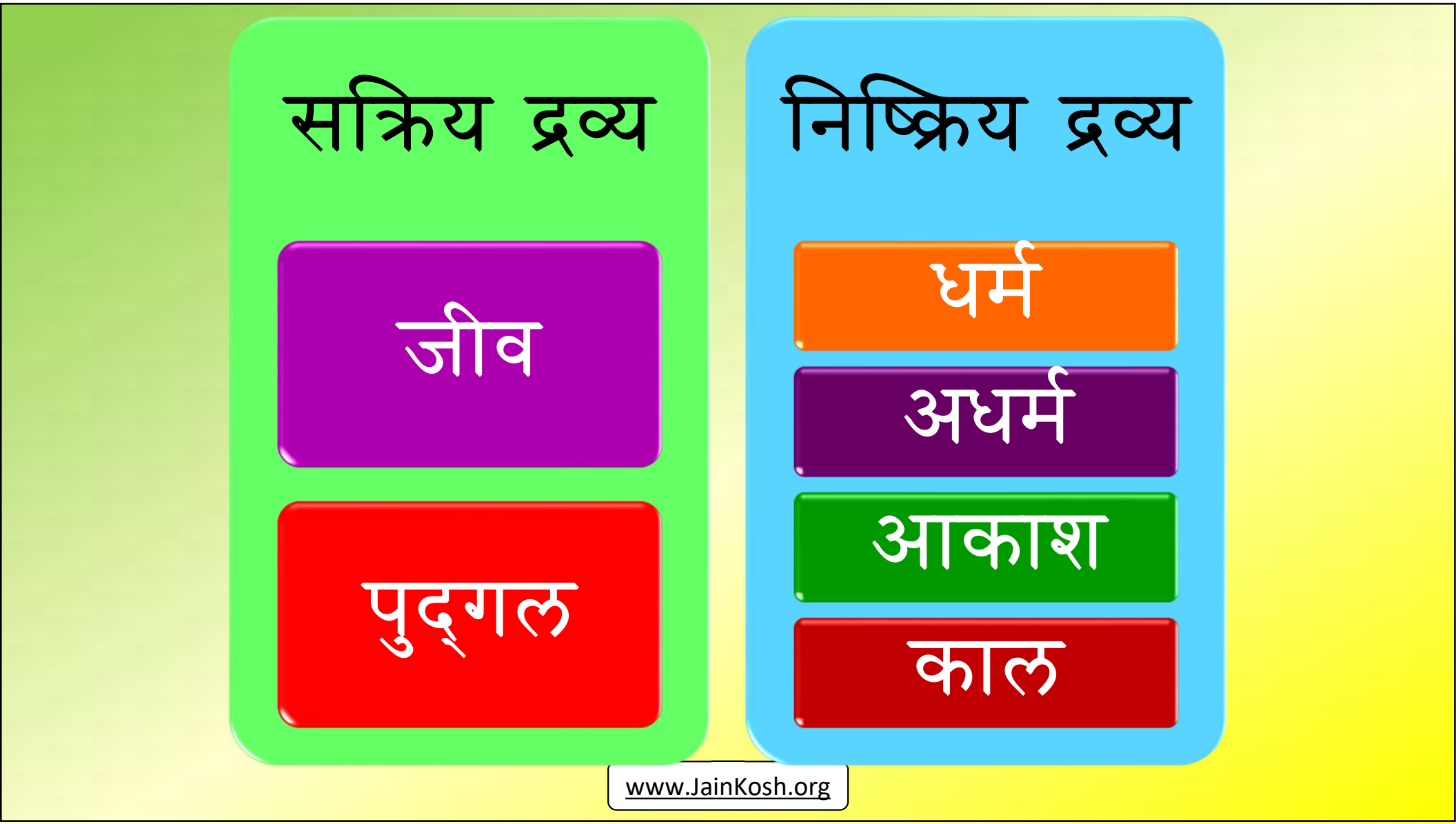

सक्रिय द्रव्य

- जीव
- पुद्गल

निष्क्रिय द्रव्य

- धर्म
- अधर्म
- आकाश
- काल

www.JainKosh.org

आस्रव

भावास्रव

जिन मोह राग द्वेष भावों के निमित्त से ज्ञानावरणादि कर्म आते हैं, उन मोह राग द्वेष भावों को भावास्रव कहते है

द्रव्यास्रव

भावास्रव के निमित्त से ज्ञानावरणादि कर्मों का स्वयं आना द्रव्यास्रव है

www.JainKosh.org

कर्मों का आना

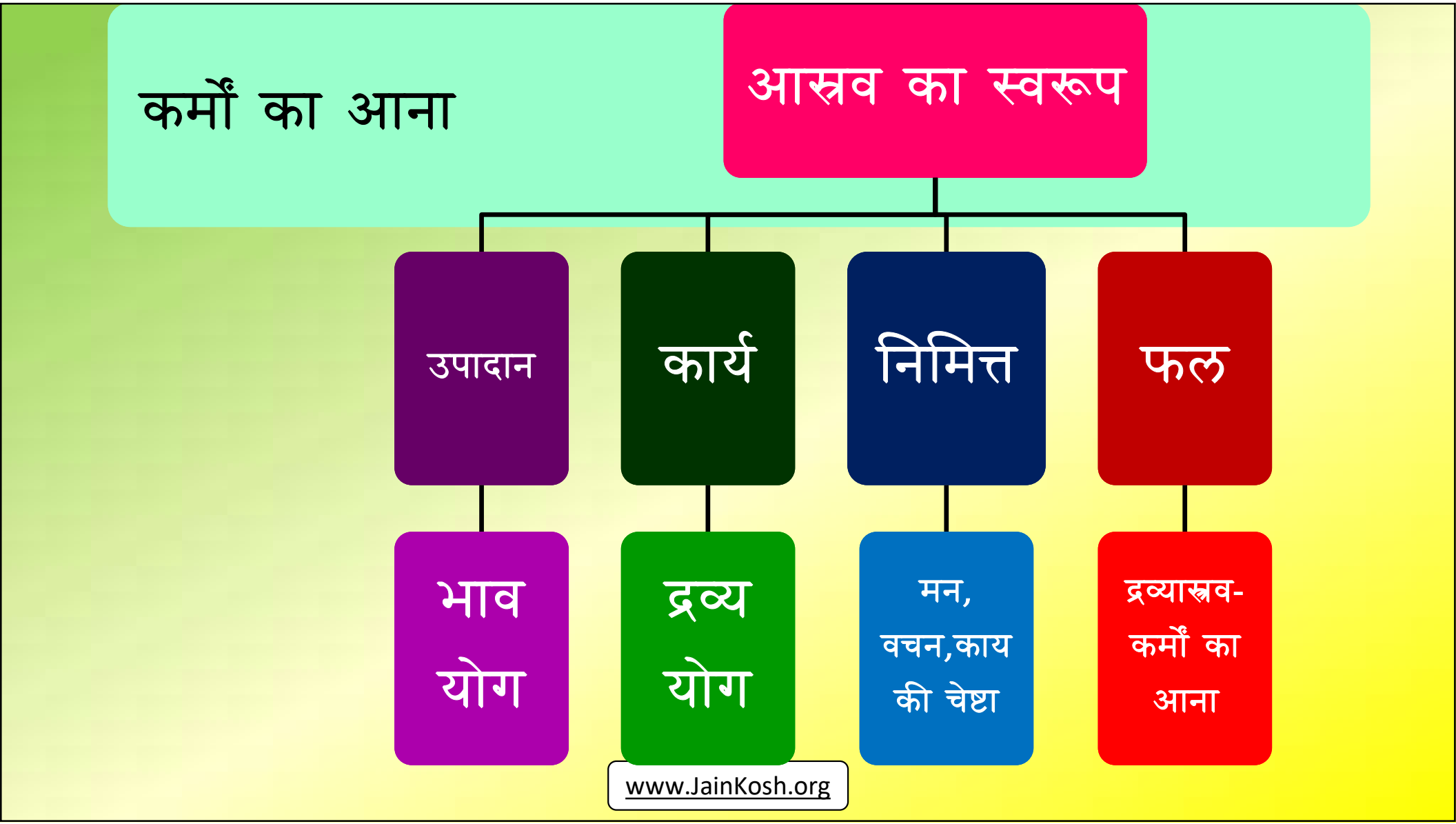

www.JainKosh.org

आस्रव

मिथ्यात्व,
अविरति, प्रमाद,
कषाय और योग
सहित आत्मा की
प्रवृत्ति आस्रव है

www.JainKosh.org

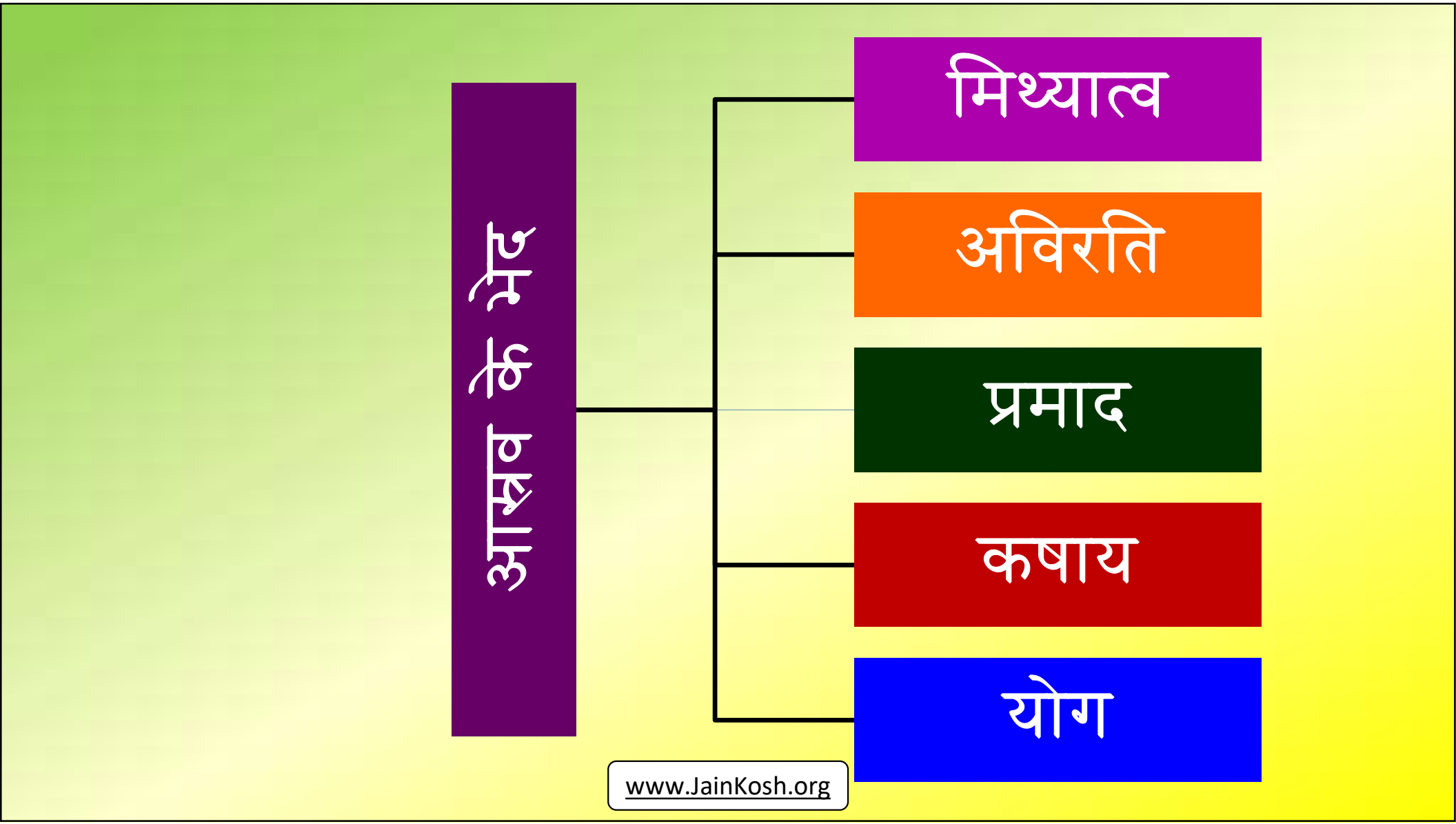
आस्रव के भेद
मिथ्यात्व
अविरति
प्रमाद
कषाय
योग
www.JainKosh.org

मिथ्यात्व	• जीवादि पदार्थों का विपरीत श्रद्धान करना
अविरति	• प्राणी और इन्द्रिय असंयम का भाव
प्रमाद	• हितकारी कार्यों में उत्साह का नहीं होना
कषाय	• जो आत्मा को कसे अर्थात् दुःख देवे
योग	• काय, वचन और मन की क्रिया

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व 5 के भेद

विपरीत

- जैसा पदार्थों का स्वरूप है, उससे उलटा मानना। जैसे देह को आत्मा मानना ।

एकांत

- पदार्थ के परस्पर विरोधी धर्मों में से एक को ही मानना, अन्य का निषेध करना। जैसे जीव को नित्य ही मानना, अनित्य नहीं ।

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व के 5 भेद

विनय

- कुदेवादि और सुदेवादि में समान रूप से पूज्यता मानना ।

संशय

- जिसमें तत्त्वों का निश्चय नहीं है ऐसे संशयज्ञान से सम्बन्ध रखने वाला श्रद्धान । जैसे जीव अमूर्तिक है या मूर्तिक है –ऐसा संशयरूप मानना?

www.JainKosh.org

मिथ्यात्व के 5 भेद

अज्ञान

- हिताहित की परीक्षा से रहित होना अज्ञानिक मिथ्यादर्शन है।

www.JainKosh.org

अविरति के 12 भेद

अविरति

प्राणी अविरति

- पृथ्वी कायिक
- जलकायिक
- अग्नि कायिक
- वायुकायिक
- वनस्पतिकायिक
- त्रसकायिक

इन्द्रिय अविरति

- स्पर्शन
- रसना
- घ्राण
- चक्षु
- कर्ण
- मन

प्रमाद के 15 भेद

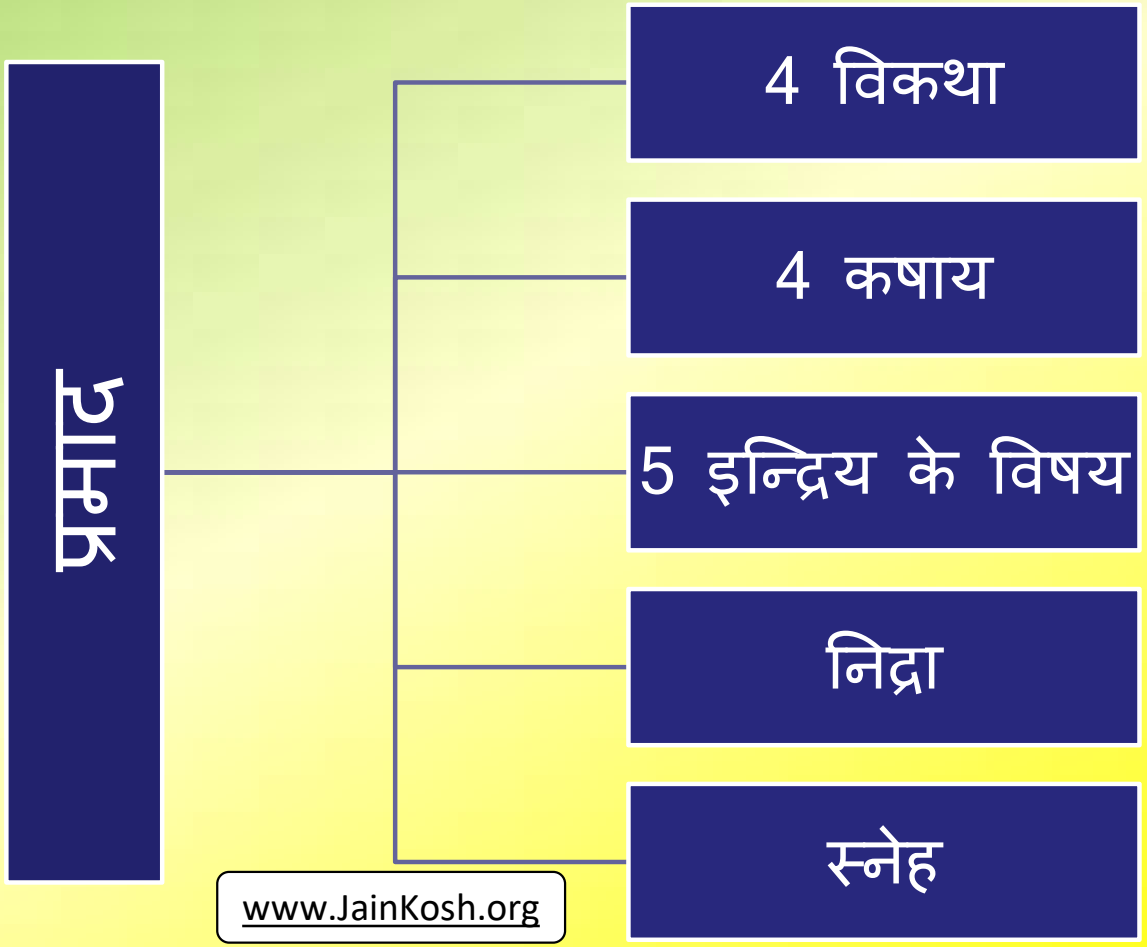

www.JainKosh.org

योग

भाव योग

कर्म-नोकर्म को ग्रहण करने की जीव की शक्ति विशेष

द्रव्य योग

आत्मप्रदेशों में परिस्पंदन

इसमें निमित्त

मन, वचन, काय की चेष्टा

www.JainKo

आस्रवत्याग का उपदेश और बन्ध, संवर, निर्जरा का लक्षण

www.JainKosh.org

ये ही आतम को दुःख-कारण, तातैं इनको तजिये;
जीवप्रदेश बँधे विधि सों सो, बंधन कबहुँ न सजिये।
शम-दम तैं जो कर्म न आवैं, सो संवर आदरिये;
तप-बल तैं विधि-झरन निरजरा,ताहि सदा आचरिये॥९॥

- ये ही=यह मिथ्यात्वादि ही
- तातैं= इसलिये
- इनको=इन मिथ्यात्वादि को
- तजिये=छोड़ देना चाहिए
- जीवप्रदेश=आत्मा के प्रदेशों का
- कबहुँ= कभी भी
- न सजिये= नहीं करना चाहिए।
- शम= कषायों का अभाव
- दम तैं=इन्द्रियों तथा मन को जीतने से
- ताहि= उस संवर को
- आदरिये= ग्रहण करना चाहिए।
- तपबल तैं= तप की शक्ति से
- विधि=कर्मों का
- झरन=एकदेश खिर जाना
- ताहि=उस निर्जरा को
- आचरिये= प्राप्त करना चाहिए

www.JainKosh.org

ये ही आतम को दुःख-कारण, तातैं इनको तजिये;
जीवप्रदेश बँधे विधि सों सो, बंधन कबहुँ न सजिये।

मिथ्यात्वादि ही आत्मा को दुःख के कारण हैं

इसीलिये इनको छोड़ देना चाहिये ।

आत्मा के प्रदेशों का कर्मों से बंधना वह बंध कहलाता है।

वह कभी नहीं करना चाहिये ।

www.JainKosh.org

शम-दम तैं जो कर्म न आवैं, सो संवर आदरिये;
तप-बल तैं विधि-झरन निरजरा,ताहि सदा आचरिये॥९॥

कषायों के अभाव और इन्द्रियों की विजय से कर्मों का नहीं आना संवर तत्त्व है ।

उस संवर को ग्रहण करना चाहिये ।

तप की शक्ति से कर्मों का एकदेश खिर जाना निर्जरा है ।

उस निर्जरा को सदा आचरना चाहिये ।

www.JainKosh.org

ये मिथ्यात्वादि ही आत्मा को दुःख का कारण हैं,

पर-पदार्थ नहीं;

इसलिये अपने दोषरूप मिथ्याभावों का अभाव करना चाहिए ।

www.JainKosh.org

बंध

भाव बंध

आत्मा के जिन परिणामों के निमित्त से कर्म आत्मा से संबंधरूप हो जाते हैं, उन मोह-राग-द्वेष, पुण्य-पाप आदि विभाव भावों को भाव बंध कहते हैं

द्रव्य बंध

उसके निमित्त से पुद्गल का स्वयं कर्मरूप बंधना द्रव्य बंध है

रागपरिणाम मात्र ऐसा जो भावबन्ध है,

वह द्रव्यबन्ध का कारण होने से वही निश्चयबन्ध है एवं छोड़ने योग्य है ।

www.JainKosh.org

संवर

आत्मा के जिन परिणामों के निमित्त से नवीन कर्म आना रुकते हैं, उन परिणामों को भावसंवर कहते हैं

- वे परिणाम कौन से हैं?
  - शम और दम रूप परिणाम

तदनुसार नवीन कर्मों का आना स्वयं स्वतः रुक जाना द्रव्यसंवर है ।

www.JainKosh.org

शम कषाय का अभाव

दम इन्द्रियों और मन को जीतना

www.JainKosh.org

आहारादि तथा पाँच इन्द्रियों के विषयरूप बाह्य वस्तुओं के त्यागरूप जो मन्दकषाय है,

उससे वास्तव में इन्द्रिय-दमन नहीं होता;

क्योंकि वह तो शुभराग है,

इसलिये बन्ध का कारण है

www.JainKosh.org

वास्तव में स्वभाव-परभाव के भेदज्ञान द्वारा,

"द्रव्येन्द्रिय, भावेन्द्रिय तथा उनके विषयों से आत्मा का स्वरूप भिन्न है"

ऐसा जानना, उसे इन्द्रिय-दमन कहते हैं।

www.JainKosh.org

शम-दम-तप या संवर-निर्जरा स्वद्रव्य के अवलंबन से ही होते हैं

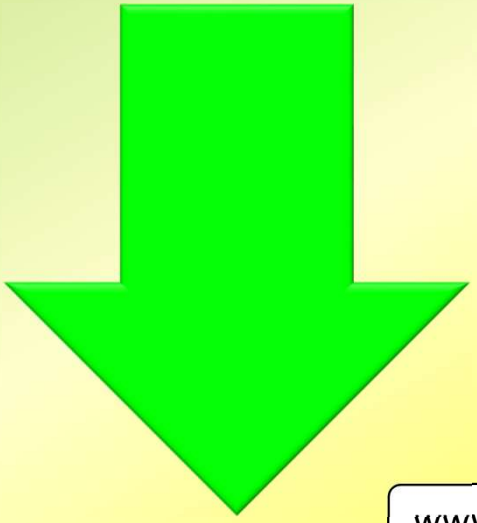

पर के अवलंबन से नहीं

www.JainKosh.org

निर्जरा

आत्मा के जिन परिणामों के निमित्त से बंधे हुए कर्म एकदेश खिरते हैं, उन परिणामों को भावनिर्जरा कहते हैं

वे परिणाम कौन से हैं?

तपरूप परिणाम

आत्मा से कर्मों का एकदेश छूट जाना द्रव्य-निर्जरा है ।

www.JainKosh.org

तप किसे कहते हैं

- इच्छाओं का निरोध तप है
- अर्थात् इच्छायें पैदा ही नहीं होना तप है
- आत्मा के अवलंबन के बल से इच्छाओं का रुकना तप है

www.JainKosh.org

मोक्ष का लक्षण, व्यवहारसम्यक्त्व का लक्षण तथा कारण

www.JainKosh.org

सकल कर्मतैं रहित अवस्था, सो शिव थिर सुखकारी।
इहि विध जो सरधा तत्त्वन की, सो समकित व्यवहारी॥
देव जिनेन्द्र, गुरु परिग्रह बिन, धर्म दयाजुत सारो।
येहु मान समकित को कारण, अष्ट-अंग-जुत धारो॥१०॥

- सकल = समस्त
- अवस्था=दशा-पर्याय
- शिव=मोक्ष
- थिर=स्थिर
- इहि विध= इसप्रकार
- सरधा=श्रद्धा करना
- समकित= सम्यग्दर्शन
- जिनेन्द्र=वीतराग, सर्वज्ञ और हितोपदेशी
- धर्म=जैनधर्म
- दयाजुत=अहिंसामय
- सारो= सारभूत
- येहू=इन सबको
- मान=जानना चाहिए ।
- कारण=निमित्तकारण
- अष्ट=आठ
- अंगजुत=अंगों सहित
- धारो=धारण करना चाहिए

www.JainKosh.org

सकल कर्मतैं रहित अवस्था, सो शिव थिर सुखकारी।
इहि विध जो सरधा तत्त्वन की, सो समकित व्यवहारी॥

आठ कर्मों के सर्वथा नाश पूर्वक आत्मा की जो सम्पूर्ण शुद्ध दशा (पर्याय) प्रकट होती है, उसे मोक्ष कहते हैं ।

वह दशा अविनाशी तथा अनन्त सुखमय है;

इसप्रकार सामान्य और विशेषरूप से सात तत्त्वों की अचल श्रद्धा करना, उसे व्यवहार-सम्यक्त्व (सम्यग्दर्शन) कहते हैं ।

www.JainKosh.org

पूर्ण शुद्धता, पूर्ण
ज्ञान, पूर्ण आनंद
प्रगट होना सो मोक्ष है

www.JainKosh.org

जीव-अजीव को उनके स्वरूप सहित जानकर स्व तथा पर को यथावत् मानना;

आस्रव को जानकर उसे हेयरूप,

बन्ध को जानकर उसे अहितरूप,

संवर को पहिचानकर उसे उपादेयरूप

तथा निर्जरा को हित का कारण मानना चाहिए।

देव जिनेन्द्र, गुरु परिग्रह बिन, धर्म दयाजुत सारो।
येहु मान समकित को कारण, अष्ट-अंग-जुत धारो॥१०॥

जिनेन्द्र देव, वीतरागी गुरु तथा जिनेन्द्रप्रणीत अहिंसामय धर्म भी उस व्यवहार सम्यग्दर्शन के कारण हैं

अर्थात् इन तीनों का यथार्थ श्रद्धान भी व्यवहार सम्यग्दर्शन कहलाता है ।

इस व्यवहार सम्यग्दर्शन को आठ अंगों सहित धारण करना चाहिए ।

www.JainKosh.org

सच्चे देव,शास्त्र,गुरु का यथार्थ श्रद्धान व्यवहार सम्यग्दर्शन है

www.JainKosh.org

यह कैसे संभव है?

सच्चे शास्त्र के बिना सात तत्त्वों का श्रद्धान कैसे होगा?

और सच्चे देव के बिना आगम कैसे प्रगट होगा?

www.JainKosh.org